PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-23 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-SJIF-6.424, GIF-2.3588,

ISSN-2454-6283 जनवरी–मार्च, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

सम्पादक

डॉ. सुनील जाधव

[illegible] की सम्पादक

web www.shodhritu.com

Email shodhritu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-23 **VOLUME- 1** IMPACT FACTOR-**SJIF-6.424,** GIF-2-3588

ISSN-2454-6283 जनवरी–मार्च, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–43160

अ नु क्र म णि का

1.राजीव कृत हिन्दी काव्य–रूपों का आलोचनात्मक परिचय:एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला' 5
2.वागड़ की जन जाति समाज एक विंहगम दृष्टि–हिमांशु पण्ड्या 6
3.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में अस्मिताबोध– डॉ.राजीव कुमार 8
4.इदन्नमम उपन्यास में सामाजिकता : एक झलक–कुषमा देवी गुर्जर 10
5.अंतर्जातीय विवाह : हिंदी दलित कथा साहित्य–एल.अनिल 11
6.समरस भारतीय संस्कृति में शांति की धरोहर:गंगा–डॉ.मंजुला 14
7.शिक्षार्थियों के अधिगम व्यवहार और जिज्ञासा पर शिक्षकों के शिक्षण–प्रभाव का अध्ययन–प्रीति कुमारी 17
8.भारतीय बहुभाषा समाज व्यवस्था में हिंदी की सुगमता–डॉ.काळे लक्ष्मण तुळशीराम 20
9.राष्ट्र निर्माण में भाषा का महत्व और राष्ट्र भाषा व राजभाषा के रूप में हिन्दी–प्रीति मिश्रा 23
10.हिन्दी शिक्षण विधियाँ : एक अवलोकन–गुलाबधर द्विवेदी 27
11.मन्नू भण्डारी के 'महाभोज' उपन्यास में स्त्री पुरुष–संबंध–कल्पना पंड्या 29
12.Gandhiji's Perspectiv E On Child Marriage,Sati,Widow Remarriage:The Triple Social Evils And Injustices Inflicted On Women- Dr.Aneesa Iqbal Sabir 30
13.स्त्रियों के उत्थान के लिए सामाजिक जनजागृति मे हिंदी साहित्य का योगदान–प्रा.सुषमा मा. नरांजे 34
14.पं.दीनदयाल उपाध्याय की शैक्षिक अवधारणा–समीर कुमार जायसवाल 37
15.समकालीन भारतीय विमर्श की वैश्विक पारस्परिकता में कृषक जीवन का बिम्ब–रवीन्द्र कुमार 39
16.डॉ.बी.आर. आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार–डॉ.किशन सत्ताजी बाभुळगावकर 43
17.माहिती अधिकार कायद्यातील कलम 4 चे महत्त्व–डॉ. संजय बापुराव गायकवाड 45
18.सतीशचन्द्र की सशक्त अभिव्यक्ति : भू–दृश्य चित्रण– शिवानी अग्रवाल 49
19.मैत्रेयी पुष्पा का हिंदी कहानियों में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण–ज्योति कुमारी 51
20.भारत में वित्तीय समावेश : आवश्यकता चुनौतियाँ व समाधान–अतुल पाण्डेय 52
21.आरिगपूडि रमेश चौधरी का कथा साहित्य एवं शिल्प विधि–डा.छाया बाजपेई 55
22.प्रतिभाराय एवं मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन का तुलनात्मक विवेचन–सरोजिनी स्वांई 58
23.मुक्तिपर्व उपन्यास में विद्रोही स्वर–प्रा.विट्ठल केशवराव टेकाळे 61
24.जयशंकर प्रसाद के उपन्यास "तितली" में भारतीय आदर्शवाद–डॉ. रत्ना कुशवाह 63
25.धर्मवीर भारती के कथा–साहित्य में मिथक–डॉ.विकास कुमार 67
26.ब्राह्मण–ग्रन्थों में आचार–दर्शन–डॉ. वीरेन्द्र कुमार जोशी 70
27.पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता–डॉ. बाबूलाल धनदे 72
28.भारतीय समाज में नारी का बदलता स्वरूप–रीतु रानी 75
29.शिवकालीन इतिहासाच्या अभ्यासाची साधने–प्रा.एच.एम.शेख 78
30. 20वीं शताब्दी में पद्य की भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास–विनीत कुमार वर्मा 81
31.उत्तेजक पदार्थ,द्रव्य सेवनांचे–परिणाम व दुष्परिणाम– प्रा.डॉ.संजीव केशवराव एकंबेकर 83
32.Effects of Coronavirus on Education System in India-Rita Shrivastava 85

1.Young India, 4th October,1930. **2.**Young India, 3rd October,1929. **3.**Young India, 24th March,1937. **4.**Harijan, 12th October, 1934. **5.**Gandhi, M.K., An autobiography or the Story of my experiments with truth, Navjivan Trust, Ahmedabad,1929,p.7 **6.**Young India, 26th August,1926.**7.**Ibid. **8.**Ibid. **9.**Young India, 21st May,1921. **10.**Harijan, 7th March,1942. **11.**Ibid.**12.**Ibid.**13.**Young India, 5th August,1926. **14.**Young India, 18th August,1927. **15.**Harijan, 22nd June,1935 **16.**Young India, August 5th,1926.**17.**Young India, 14th October,1926. **18.**Young India, 19th August,1926. **19.**Young India, 4th February,1926. **20.**Gandhi M.K., Constructive Programme – It's Meaning and Place, Poona,1945, p.19 **21.**Young India, 21st July,1921 **22.**Gandhi M.K., Selected Worksof Mahatma Gandhi, Vol. IV(Selected Letters), Navjivan Trust, Ahmedabad,1968, p.341 **23.**Gandhi M.K., Constructive Programme–It's Meaning and Place, Op.cit, p.19. **24.**Young India, 27th August,1925. **25.**Young India, 15th September,1927. **26.**Young India, 19th August,1926. **27.**Gandhi M.K., Selected Letters....., Op.cit, p.344 **28.**Young India, 1st September,1927.**29.**Gandhi M.K., Constructive Programme....., Op.cit, p.19. **30.**Gandhi M.K., The Collected works of Mahatma Gandhi, Vol LXIV, 1936-37, Ahmedabad, 1982, p.165
31. Gandhi M.K., Selected letters.....Op.cit, p.19.

13.स्त्रियों के उत्थान के लिए सामाजिक जनजागृति मे हिंदी साहित्य का योगदान–प्रा.सुषमा मा. नरांजे

सहायक प्राध्यपाक (हिंदी विभाग) एस.एस. गर्ल्स कॉलेज, गोंदिया

अक्सर यह कहते–सुनते पाया जाता है कि मानव सभ्यता का विकास स्त्री–जाति की पराधीनता का इतिहास भी है। परिस्थितियां बदलते गयी परंतु स्त्री की पराधीनता कायम रही। थोडे बहुत उलटफेर के साथ किसी व्यक्ती विशेष की भूमिका या किसी विशेष कालखंड अथवा परिस्थितियो मे हाने वाले बदलाव के कारण बाह्य स्वरुप मे कुछ बदली हुई स्थितियाँ दिखाई दे सकती है लेकिन मूलभूत सामाजिक संरचना और क्रियाकलापों मे ज्यादा अन्तर नहीं हो सकता। आदिम समाज से लेकर कबीले या गण समूहो मे मातृसत्ताक समाज ही था और वंश अथवा संतान की पहचान माता के रुप में होती थी।

कालांतर मे कृषि का विकास हुआ और जैसे–जैसे संपत्ति बढती गयी नारी की तुलना मे पुरुष का महत्व बढता गया। अब नारी के नाम से वंश चलना और माता के द्वारा विरासत का अधिकार मिलना बंद हो गया। पितृसत्ताक की स्थापना हुयी। परिवार की उत्पत्ती के साथ अब पुरुष परिवार का मुखिया था। सामंती समाज का विकास और उत्कर्ष स्त्री–दासता की गाथा है। स्त्री दासता से मुक्ती की कल्पना सामंती समाज में करना असम्भव था। दुनियॉ के सभी समुदायों, सभ्यता, धर्म, जाति और वर्ग में पितृसत्ता किसी ना किसी रुप में मौजूद रही है। सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व्यवस्था और मूल्यों, मर्यादाओं, आदर्शो और संस्कारों के विभिन्न रुपों के जरिए बडे बारीक ढंग से इसे समाज की संरचना में बुना गया है। इसके माध्यम में पुरुष को स्त्री की तुलना में श्रेष्ठ स्थापित करने का जो षड्यंत्र रचा गया उसमें स्त्री शोषण को सहज और स्वाभाविक मान्यता के रुप में समाज के मन–मास्तिष्क में बैठाने की निरंतर कोशिश की गयी। इन सभी रुढिवादी व्यवस्थाओं और सदियों से चले आ रहे सुनियोजित शोषण उत्पीड़त के विरुध्द विश्व भर के वैचारिक चिंतन में नारीवादी विमर्श ने एक नया आयाम और परिप्रेक्ष्य निर्माण किया।

स्त्रियों की अंधेरी दुनिया में रोशनी के प्रवेश की, घर–परिवार की चार दिवारी के भीतर सामाजिक आर्थिक बंधनो में जकडी स्त्री मुक्ति की कहानी लगभग अठारवीं शताब्दी में ही शुरु हुई योरोप में स्त्रियों की सामाजिक स्थिती में बदलाव की प्रक्रिया औद्योगिक क्रांती के फलस्वरुप निर्मित हो रहे परिवर्तनों के द्वारा शुरु हुई । पश्चिम में स्त्रीविमर्श शुरु करने का श्रेय सीमोन द बोउवार को जाता है, जिन्होने द सेकेन्ड सेक्स लिखकर पितृसत्ताक समाज में तहलका मचा दिया और परंपरागत सामाजिक संरचना को चुनौती दे डाली। उन्होने माना कि "स्त्री पैदा नही होती, उसे बना दिया जाता है ।" स्त्री अस्तित्व और समाज के दमन चक्र में उसकी उपेक्षा, शोषण उसकी

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed Journal

स्वतंत्र मानसिकता पर पुरुष का अधिकार जिन नियमों और मान्यताओं के रुप में आरोपित किए गए, वह चिंतन उसके प्रति विद्रोह और मुक्ति का विमर्श और आंदोलन बनकर सामने आया। यद्यपि सन् 1975 में अंतरराष्ट्रयी महिला वर्ष घोषित हुआ।

भारतीय संदर्भो में यह परिवर्तन उन्नीसवीं शताब्दी के राजनैतिक सामाजिक बदलाव और सुधारवादी आंदोलनों के परिणाम स्वरुप था। दोनों की स्थितियों और प्रवृत्तियों में अंतर था। स्त्रीवाद या नारीवाद (फेमिनिजम) की जब बात की जाती है तो इसका तात्पर्य स्त्रियों के लिए समान अधिकार तथा उनका कानूनी संरक्षण प्रारम्भिक चरणों में यह संघर्ष समानता और सम्मानजनक जीवन यापन के लिए मानवोचित अधिकारों के लिए था। सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया के प्रारम्भिक चरण में आधारभूत स्थितियों के लिए ही संघर्ष होता है। फिर पैरों के नीचे जमीन आने के बाद संघर्ष के विविध आयाम जुड़ते है। स्त्री आंदोलन ने अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए तथा राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक रुप से समानता के लिए बडे समूहों को प्रभावित किया।

भारत में स्त्री पराधीनता से मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास प्रारम्भ में समाज सुधारकों द्वारा किये गए। बदलाव की यह प्रक्रिया उन्नीसवीं सदी में प्रारम्भ हुई। उन्नीसवीं सदी के सभी समाज सुधार आंदोलन विशेष रुप से स्त्री केन्द्रीत थे बंगाल के ब्रह्म समाज आंदोलन के साथ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर केशवचन्द्र सेन जैसे लोग सम्बध्द थे। सती प्रथा के प्रतिबंध के बाद इन लोगो के प्रयासों से विधवा विवाह को कानूनी मान्यता मिली और सदी के अंत में बालविवाह का विरोध मुखर हुआ। समाज में विधवा स्त्रियों विशेष रुप में बाल विधवाओं की भीषण दुर्गती और दयनीय अवस्था के कारण सामाजिक कुरीतियों के विरुध्द ये आंदोलन सक्रिय विरोध कर रहे थे। उत्तर भारत में स्त्री जीवन में सुधारों के लिए प्रयत्नशील दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज आंदोलन शुरु किया गया। देश में एक नयी चेतना और जागृती का वातावरण निर्मित हो रहा था। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्री–फुले को स्मरण करना आवश्यक है। दलित कन्याओं की शिक्षा और सामाजिक उत्थान के लिए अपने प्रयासों को संगठित रुप देने के लिए महात्मा फुले ने बाद के वर्षो में सत्यशोधक समाज संस्था की स्थापना की।

स्त्रीचेतना और सशक्तिकरण अब राष्ट्रीयता का पर्याय बनने लगे। अनेक पढी–लिखी स्त्रियों ने लेखन और पत्रकारिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'कमला' 'सुप्रभात' 'महिला महत्व' 'नारी गौरव' 'महिला' 'स्त्री दर्पण' 'गृहलक्ष्मी' आदि पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन स्त्रियॉ ही करने लग गई थी। आज स्त्री लेखन साहित्यिक चर्चा में एक मुख्य विषय है। आज न सिर्फ हिंदी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में स्त्री जीवन के प्रश्नों और मानोभावों को लेखन का विषय बनाकर भारतीय साहित्य को समृध्द किया गया है। इस संदर्भ में पंजाबी लेखिका अमृता प्रितम का आत्मकथात्मक उपन्यास 'रसीदी टिकट' संवदेनशील स्त्री का पक्ष प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा एक उच्च कोटी की साहित्यकार थी। उनकी कविताएँ दीपशिखा, नीरजा, रश्मी, यामा और सांध्यगीत में महादेवी ने एक पारलौकिक, निर्गुण को अपनी भावनाएँ समार्पित कर उन्हें काव्य रुप प्रदान किया। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य में अपनी कालजयी कृति झांसी की 'रानी' के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान अमर हो गयी। सुभद्राकुमारी का साहित्य आदर्श की परिधी में आता है। उसमें स्त्री प्रश्नों के साथ–साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रति चिन्ता दिखाई देती है। चूँकि साहित्य लेखन वह क्षेत्र है, जो समाज से आगे रहता है अत: मानसिकता में बदलाव भी सबसे पहले वही परिलक्षित होता है। स्त्री–लेखन में भी यह बात दिखाई देती है। स्त्री लेखिकाओं ने सामाजिक राजनैतिक –आर्थिक व्यवस्था की तमाम विडम्बनाओं को अपना विषय बनाया। मुख्यत: सन् 1975 के बाद लिखे गये ऐसे उपन्यास प्रमुखत: स्त्री लेखिकाओं द्वारा ही लिखे गये हैं। जैसे–कृष्णा सोबती का 'जिन्दगीनामा' मन्नू भंडारी का 'महाभोज' मंजुल भगत का 'खातुल' नासिरा शर्मा का 'सात नदियॉ एक समन्दर' चन्द्रकान्ता का 'ऐलान गली जिन्दा है' और 'कथा सतिसर' चित्रा मुदगल का 'आंवा' मृणाल पांडे का 'पटरंगपुर पुराण' अलका सरावगी का 'कलिकथा वाया बाइपास' मधु कांकरिया का 'सूखते चिनार' ये कुछ स्त्री केन्द्रीत उपन्यास है जिसमें इतिहास राजनिती, समाज और व्यवस्था के बिदुप की सक्षम और सूक्ष्म व प्रेरक व्यंजना हुयी है। इससे पहले भी लगभग सन् 1960 से पूर्व के उपन्यासों में नारी केन्द्रीय विषय के रुप में दिखाई देती है। प्रेमचंद के 'सेवासदन' 'निर्मला' जैसे उपन्यासों में भी नारी केन्द्रीय विषय के रुप में दिखाई देती है। लेकिन तथ्य यह है कि इनमें नारी की या तो जीवन गाथा केन्द्र में रही है या उसकी व्यथा–कथा।

अपनी आस्मिता अपनी आत्मचेतना और अस्तित्व बोध के प्रति नारी की सजगता असल में स्वातंत्रयोत्तर कालीन उपन्यासों में ही उभरने लगी। सन् 1960 के पश्चात के उपन्यासों में यह प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित होती गयी। इस काल के पुरुष उपन्यासकारो ने भी स्त्री की अस्मिता को उजागर किया है। अमृतलाल नागर का 'नाच्यौ बहुत गोपाल' शिवप्रसाद सिंह का 'शैलूष' संजीव का 'धार' आदि ऐसे उपन्यास है जिनमें नारी मौन, मूक न रह कर मुखर होने लगी है। चाहे वह 'नाच्यौ बहुत गोपाल' की निर्गुनिया हो या 'शैलूष' उपन्यास की नायिका सावित्री अथवा जगदंबा प्रसाद दिक्षीत के 'मुरदा घर' उपन्यास की मैना। इनके चरित्र –चित्रण से स्पष्ट होता है कि नारी अपने अन्याय के विरुध्द मुँह खोलने लगी है। वह अब अपना सच बोलने लगी है।

यह सच है कि भारतीय नवाजागरण काल में कई महापुरुषो ने स्त्री उध्दार के प्रयास किये। साहित्य में पुरुष रचनाकारों ने स्त्री के उत्थान के लिए सामाजिक जनजागृती में अपना योगदान दिया है। इस श्रेणी में प्रेमचंद प्रमुख है। श्'गोदान' में विवाह संस्था, विसंगती और

पुरुष वर्चस्व के चलते मालती विवाह न कर मेहता के साथ आत्मीय मित्र बनकर रहना पसन्द करती है। आज जो लेखिकाएँ स्त्री–विमर्श और नारी–मुक्ति की बातें करती है। तो इस विमर्श की जमीन हमारे कुछ पुरुष रचनाकरों ने पहले से तैयार की है। यशपाल ने 'दिव्या' उपन्यास में, भवतीचरण वर्मा ने 'पहले से' में स्त्री की दी गयी संहिताओं और रुढ नैतिकताओं को लांघ कर, अपने नियम आप बनाने वाले सशक्त चरित्र रचे। गांधीजी और नेहरु ने तो स्त्री–मुक्ति को स्वराज आंदोलन का हिस्सा बना दिया। प्रेमचंद्र, प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त ने स्त्री को अनावश्यक बन्धनों से मुक्त करने की आवाज उठायी और पुरुष वर्चस्व को चुनौती दी प्रसाद कामाण्यनी में मनु से कहते है, "मनु तुम श्रध्दा को भूल गये तुम भूल गये पुरुषत्व मोह मे, कुछ सत्ता है नारी की....." गुप्त जी पंचवटी मे कहते है, "नर कृत सब शास्त्रों के बन्धन है। नारी ही को लेकर, अपने लिए सभी सुविधाएँ पहले ही कर बैठे नर।"

आधुनिक युग में नारी की स्थिती में बहुत कुछ अंतर आया है। उसकी दुरावस्था देखकर समाज सुधारकों ने नये कानून नयी सुविधाएँ उन्हे प्रदान की। नारी कल्याण योजनाओं ने तो क्रांतिकारी परिवर्तन किये किन्तु अभी भी यदि हम ग्रामीण नारी की ओर देखते है तो लगता है कि परिवर्तन की गती उतनी तेज नहीं रही । मान्यताएँ रुढीयॉ, अन्धाविश्वास सबको अपनी जगह से हटाने में गति का धीमा होना स्वाभाविक है। पर आज वहॉ तेजी से परिवर्तन रेखांकित किया जा सकता है, क्योंकि अब परम्पराओं की जडे हिलने लगी है, संस्कारों के प्रति अट्ट श्रध्दा को भी झटका लगा है। स्त्री शिक्षा का सभी क्षेत्रों में विकास हुआ, अधिकारों की मांग बढी और आत्माभिव्यक्ति के लिए क्षुब्ध और छटपटाते हृदय ने साहित्य को माध्यम बनाया। राजनीति और समाज के सभी क्षेत्रों में जब महिला सशक्तिकरण का दौर शुरु हुआ तो साहित्य की दुनिया में भी यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। महिला लेखन के केन्द्र में स्त्री अस्मिता का संघर्ष अदम्य जिजीविषा, स्त्री स्वातंत्रय, देह और उत्पीडन के प्रति विद्रोह और स्वयं की पहचान के प्रति जागरुकता के साथ सामाजिक पहलुओं से जुडे सथार्थ को भी देखा गया। मानवीय संवेदना की गहरी पडताल करते हुए सभी वर्ग, की और जाती की स्त्रियों की अंतरात्मा का अवलोकन करके ये स्त्री रचनाएँ पाठकों को स्तब्ध और उद्वेलित कर देती है। यह स्त्री लेखन नारी शोषण के विरुध्द परिवर्तन और ब्रांति के साथ समकालीन साहित्य में सशक्त हस्तक्षेप भी करता है।

स्त्री लेखन विमर्शो का लेखन है। उनका लेखन सामाजिक असहमतियों का लेखन है। उनकी पहली असमहती उनके अपने परिवार से है। जिससे उनका संबंध है। अपने ही परिवार में अपनी स्थिति पर वह सवाल उठाती है। स्त्रियों ने अपनी यह असहमतियॉ अपना विरोध और अपने यह सवाल स्त्री–विमर्श का पाठ पढे–गुने बिना ही उठाए है। यह असहमतियॉ कभी धर्मसत्ता के विरुध्द थी तो कभी सामाजिक पारिवारिक ढांचे के विरुध्द। पिछते कुछ दशक में हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन का व्यापक प्रस्फुटन एक अनूठी और ऐतिहासिक घटना है। यहॉ स्त्री लेखन एक सामाजिक सच्चाई और अस्मिता के संघर्ष की चुनौती के रुप में सामने आता है। यह स्त्री के अपने नजरिए से स्त्री लेखन का नया पाठ है। इस साहित्य में स्त्री विमर्श अस्मिता का एक आंदोलन है जो हाशिए पर छोड़ दिए गए नारी अस्तित्व को फिर केन्द्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है। यह साहित्य स्त्री को सामाजिक संरचना में दूसरे दर्जे पर रखने का मुखर विरोध और स्त्री को एक जीवंत मानवीय इकाई के रुप में स्वीकार करने का प्रयास है।

संदर्भ :–

1. साहित्य में नारी चेतना, सं. दयानिधि मिश्र, उदयन मिश्र, प्रकाश उदय, वाणी प्रकाशन.
2. स्त्री प्रश्न, ले. नमिता सिंह, वाणी प्रकाशन.
3. विमर्श के विविध आयाम, ले. डॉ. अर्जुन चव्हाण वाणी प्रकाशन.

SHODHRITU PEER Reviewed JURNAL